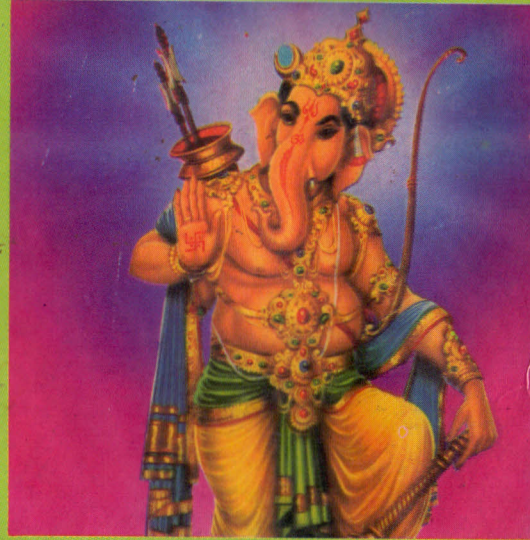


गणपति साधना



ॐ मनस चेतना केन्द्र, जोधपुर ५१
एस-सीरिज

अमृत बूंद पड़ी तन-मन पर

ये मात्र कैसेट ही नहीं हैं,
अपितु जीवन के, साधना के पग-पग
पर मार्गनिर्देश करने का एक सशक्त माध्यम
हैं पूज्य गुरुदेव की वाणी में—

ऑडियो कैसेट प्रति - 30/- वीडियो कैसेट प्रति - 200/-

गुरु गीता
गुरु हमारो गोत्र है
गुरु गति पार लगावे
गुरु मोरो जीवन आधार
गुरु पादुका पूजन
दुर्लभोपनिषद
कठोपनिषद
शिष्योपनिषद
प्रेम धार तलवार की
प्रेम न हाट बिकाये
अकथ कहानी प्रीत की
पिव बिन बुझे न प्यास

सिद्धाश्रम
कुण्डलिनी
स्वर्णदिहा अप्सरा
लक्ष्मी आबद्ध प्रयोग
पाशुपतास्त्रेय
शिव पूजन
अक्षय पात्र साधना
मैं गर्भस्थ बालक को चेतना देता हूँ
कुण्डलिनी जागरण की झलक
तंत्र के गोपनीय रहस्य
हिप्नोटिज्म रहस्य
साधना, सिद्धि एवं सफलता

सम्पर्क

मंत्र शक्ति केन्द्र, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.),

फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

गोपनीय साधना

आशीर्वाद

डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली



एस-सीरिज

© मनस चेतना केन्द्र

संकलन, सम्पादन : नन्दकिशोर श्रीमाली

प्रकाशक

मनस चेतना केन्द्र

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी

जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

प्रथम संस्करण : चैत्र नवरात्रि 1995

मूल्य : 5/-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका से साभार लेख

पुस्तिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या संपादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पुस्तिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पुस्तिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बारे में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव या न प्रभाव होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पुस्तिका कार्यालय से मंगवायें, सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पुस्तिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ आदि की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई ऐसी उपासना जप या यंत्र प्रयोग न करे जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पुस्तिका में प्रकाशित एवं विज्ञापित आयुर्वेदिक औषधियों का प्रयोग पाठक अपनी जिम्मेवारी पर ही करें। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है कि वह संबंधित लाभ तुरंत प्राप्त कर सके, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण थका और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। किसी भी सम्बंध में किसी प्रकार की कोई आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पुस्तिका परिवार इस सम्बंध में किसी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

अनुक्रमणिका

क्रम	शीर्षक	पृष्ठ
१.	गणपति साधना	०६
२.	महामणपति साधना	१५
३.	विजय गणपति साधना	२६
४.	मयूरेश स्तोत्र चिन्ता एवं रोग निवारण हेतु	३१
५.	श्री चिन्तामणि गणपति प्रयोग	४६

एस-सोरिज

दो शब्द

अरविन्द प्रकाशन द्वारा कुछ माह पूर्व ही लघु पुस्तकें प्रकाशित करने की अभिनव योजना प्रारम्भ की गई थी। प्रथम दो सेट अत्यधिक लोकप्रिय होने के कारण एस-सीरिज के अन्तर्गत इस तृतीय सेट को एक प्रकार से समय से पूर्व ही प्रकाशित करना पड़ रहा है, अभी तक आध्यात्मिक और साधना-जगत् के कौतूहलों एवं रोचक विवरणों से भरी पुस्तकें इस रूप में प्रकाशित नहीं हुई थीं, किन्तु इस नूतन प्रयास द्वारा एक नई परम्परा का प्रादुर्भाव हुआ, जिससे **पाठक वर्ग ने भी बोझिलता और उबाऊ शास्त्रीय विवरणों के स्थान पर सरल और सहज भाषा में प्रामाणिक विवरणों के साथ वास्तविक अनुभूतियों को पढ़कर लाभ प्राप्त किया**, और वह भी सब कुछ मनोरंजक व सरस ढंग से।

हमारा प्रयास रहा है कि रोचकता व यथार्थपरकता का सुखद समन्वय कर पाठक वर्ग में साधना के प्रति नई धारणा विकसित की जाए। प्रथम दो सेट की हाथोंहाथ बिक्री हो जाना इस प्रयास की सफलता को सूचित करता है।

वास्तव में आज भी पाठक वर्ग अच्छे व ज्ञानात्मक साहित्य के लिए आग्रहशील है ही। अन्तर रुचियों में नहीं आया है वरन् अन्तर यह हो गया है कि अब समय की न्यूनता होने के कारण उसके पास समय नहीं है कि वह जटिल व गम्भीर अध्ययन कर सके। ये लघु पुस्तकें इसी समस्या का निदान करने में सहायक हैं, इनमें उन्हीं साधना विधियों का प्रामाणिक व अनुभव सिद्ध वर्णन किया गया है,

जो कि शास्त्रीय ग्रन्थों में अन्यथा ३० व ४० पृष्ठों में प्राप्त होता है।

इस प्रस्तुत सेट में भी पूर्व दो सेट की भांति ही आध्यात्मिक व व्यवहारिक जीवन की स्थितियों को साथ लेते हुए आठ पुस्तकें प्रस्तुत की जा रही हैं, जिससे पाठक का बहुविध मनोरंजन हो सके — **‘में सुगन्ध का झोंका हूं’** पूज्यपाद गुरुदेव के प्रवचनों पर आधारित श्रेष्ठ आध्यात्मिक पुस्तक है, **‘बगलामुखी साधना’** में शत्रु संहार एवं अनिष्ट निवारण की प्रामाणिक विधियाँ दी गई हैं, **‘शक्तिपात’** व्यक्ति के अन्दर निहित परालौकिक ज्ञान की क्षमता को स्पष्टता से उजागर करती है, **‘सनसनाहट भरा सौन्दर्य’** सौन्दर्य साधना से सम्बन्धित विशिष्ट व व्यवहारिक पुस्तक है, **‘श्री यंत्र साधना’** जीवन में अतुलनीय सम्पदा को प्राप्त करने व उसे स्थायी बनाकर रखने का मार्ग स्पष्ट करती है, भगवान् गणपति का भारतीय जीवन में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है, और इन्हीं की प्रामाणिक साधना-उपासना **‘गणपति साधना’** के अन्तर्गत प्रस्तुत की जा रही है, **‘सरस्वती साधना’** के अन्तर्गत देवी के त्रिगुणात्मक स्वरूपों में से विशिष्ट वरदायक स्वरूप का वर्णन उपयोगी साधनाओं सहित निहित है, **‘पारदेश्वरी साधना’** स्वर्ण निर्माण की प्रक्रिया में आधारभूत देवी की साधना विधि है।

इस प्रकार यह तृतीय सेट भी पूर्व के दो सेट की ही भांति सुविज्ञ पाठकों का स्वस्थ मनोरंजन करने के साथ-साथ ज्ञान-लाभ कराने में तथा व्यवहारिक जीवन में सहायक सिद्ध होगा, ऐसी ही हमारी मनोकामना है और समस्त पाठकों के प्रति शुभकामना भी।

- प्रकाशक

गणपति साधना

कलियुग में गणपति शीघ्र सफलतादायक देवता माने गए हैं। गणपति से संबन्धित कई साधनाएं और सिद्धियां हैं, मैं नीचे कुछ साधनाएं स्पष्ट कर रहा हूं, जो प्रत्येक गृहस्थ अपना सकता है।

इसके लिए किसी प्रकार की विशेष पूजा या अर्चना की जरूरत नहीं है, और न ही विशेष नियम आदि को ध्यान में रखने की आवश्यकता है, इस प्रकार की साधनाएं पुरुष और स्त्री समान रूप से कर सकते हैं।

१. कामना सिद्धि गणपति साधना

साधक को चाहिए कि सर्वप्रथम वह गणपति की मूर्ति या तस्वीर पर निम्नलिखित गणपति नामों का स्मरण कर उन

पर दूर्वादिल समर्पित करे, इससे समस्त प्रकार की कामना सिद्धि होती है।

१. सुमुखाय नमः २. एकदंताय नमः ३. कपिलाय नमः
४. गजकर्णकाय नमः ५. लम्बोदराय नमः ६. विकटाय नमः
७. विघ्ननाशाय नमः ८. विनायकाय नमः ९. धूम्रकेतवे नमः
१०. गणाध्यक्षाय नमः ११. भालचन्द्राय नमः १२. गजाननाय नमः।

इन नामों से गणपति विग्रह पर दूर्वा चढ़ाने से गणपति शीघ्र प्रसन्न होते हैं तथा साधक की समस्त इच्छाओं को पूरी करते हैं।

२. गणपति साधना

साधना की दृष्टि से अलग-अलग रूपों में गणपति का स्मरण और चिन्तन विभिन्न फलों की प्राप्ति में सहायक है, तंत्र सार में गणेश के भिन्न-भिन्न ध्यानों का फल इस प्रकार है।

पीतं स्मरेत् स्तम्भकार्ये एवं वश्याय मंत्री ह्यरुणं स्मरेत् तम् ।

कृष्णं स्मरेन्मारण कर्मणीशमुच्चाटने धूमनिभं स्मरेत् तम् ।।

बन्धूकपुष्पादिनिभं च कृष्टौ स्मरेद् बलार्थं किल पुष्टिकार्ये ।

स्मरेद् धनार्थी हरिवर्णमितं मुक्तौ च शुक्लं मनुवित् स्मरेत् तम् ।

एवं प्रकारेण गणं त्रिकालं ध्यायज्जपन् सिद्धियुक्तो भवेत् सः ।।

अर्थात् साधकों को चाहिए कि वे स्तम्भन कार्य में गणेश जी के पीत कांति वाले स्वरूप का ध्यान करें, वशीकरण

आदि कार्यों में गणेश जी का अरुण कान्तिमय स्वरूप का चिन्तन अनुकूल रहता है। मारण कार्य में कृष्ण कान्ति का ध्यान फलदायक माना गया है, इसी प्रकार उच्चाटन कार्य में धूम्र वर्ण वाले गणपति का स्मरण करना चाहिए, आकर्षण कार्य में बंधूक पुष्प के समान लाल वर्ण वाले गणपति का चिन्तन करना चाहिए। बल एवं पुष्टि कार्य के लिए शान्त गणपति का ध्यान अनुकूल माना गया है। धन प्राप्ति के इच्छुक साधकों को हरित वर्ण वाले गणपति का ध्यान करना चाहिए तथा मोक्ष प्राप्ति के लिए शुक्ल वर्ण वाले गणपति का ध्यान पूर्ण फलदायक माना गया है।

३. गणपति आराधना

साधकों को चाहिए कि वे शास्त्र की मर्यादा के अनुकूल कार्य और साधना करें, जिससे कि उन्हें शीघ्र और पूर्ण सफलता प्राप्त हो सके, इसके लिए निम्न तथ्यों का ध्यान साधकों और गृहस्थ व्यक्तियों के लिए आवश्यक है।

१. सभी कार्यों की सिद्धि के लिए गणपति के साथ श्री सूर्य, श्री दुर्गा, श्री शिव और श्री विष्णु की पूजा भी करनी चाहिए।
२. गृहस्थ व्यक्तियों को केवल एक ही देवता की पूजा नहीं करनी चाहिए, अपितु उनके लिए एक से अधिक देवताओं

की पूजा अनुकूल रहती है।

३. पूजा में साधक को चाहिए कि सर्वप्रथम सूर्य, फिर गणपति, फिर दुर्गा, शंकर और विष्णु की पूजा करनी चाहिए, क्रम इसी प्रकार रहना चाहिए।
४. कभी-कभी घर में या पूजा स्थान में एक से अधिक मूर्तियां या चित्र हो जाते हैं, अतः साधकों को इनकी संख्या का ज्ञान आवश्यक है।
घर में दो शिवलिंग, दो शंख, दो सूर्य प्रतिमाएं, दो शालिग्राम, दो गोमती चक्र, तीन गणपति तथा तीन देवी प्रतिमाएं सर्वथा वर्जित हैं, इस प्रकार की संख्या दरिद्रता लाती है।
५. गणपति पूजा या साधना प्रारम्भ करने के लिए चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, माघ एवं फाल्गुन मासों के शुक्ल पक्ष मान्य हैं।
६. भौमवार से गणपति साधना प्रारम्भ करनी नहीं चाहिए। इसी प्रकार किसी भी पक्ष की चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी भी वर्जित है।
७. मत्स्य पुराण के अनुसार गणपति की मूर्ति गृहस्थ साधक के लिए बारह अंगुल परिमाण की होनी चाहिए, इसमें बड़ी व्याज्य है, पर इससे छोटी ग्राह्य है।
८. गणपति आदि देवताओं का मंदिर घर में दृशान् क्राण में

होना चाहिए, तथा देवताओं का मुख पश्चिम की तरफ रहे।
(अ) ऐशान्ये देवमंदिरम्।
(आ) देवानां हि मुखं कार्यं पश्चिमायां सदा बुधेः॥

(नारद पुराण)

६. गणपति का अभिषेक ताम्रपात्र में रखे हुए जल से करना चाहिए।
१०. लाल वर्ण वाली सुरभित पुष्पों के साथ दूर्वा अंकुर गणेश जी को अर्पित किए जाते हैं।
११. तुलसी दल का प्रयोग गणपति के लिए सर्वथा निषिद्ध है।
“न तुलस्या गणाधिपम्।”

(ज्ञान माला)

१२. गणपति के मंदिर की मात्र एक परिक्रमा करनी चाहिए, इससे ज्यादा परिक्रमा दरिद्रता देने वाली मानी गई है।
१३. गणपति को चढ़ाया हुआ नैवेद्य या प्रसाद सबसे पहले गणपति के सेवकों को देना चाहिए, इसके बाद ही साधक उस प्रसाद को ग्रहण करे। गणपति के चार सेवकों के नाम १. मुद्गल २. गालव ३. गार्ग्य और ४. सुधाकर हैं।
१४. गणपति उपनिषद में कहा गया है, कि गणपति पूजन से नृप गुरु पूजा आवश्यक है।

१५. गणेश - गायत्री मंत्र इस प्रकार है —
एकदन्ताय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि।
तन्नो दन्ती प्रचोदयात्॥

(गणपत्योपनिषद्)

१६. गणेश नाम का अर्थ इस प्रकार है —
ज्ञानार्थवाचको गश्च णश्च निर्वाणवाचकः।
तयोरीशं परं ब्रह्म गणेशं प्रणमाम्यहम्॥
अर्थात् ‘ग’ ज्ञानार्थ वाचक और ‘ण’ निर्वाण वाचक है, अतः गणेश नाम भौतिक सुख और मोक्ष प्राप्ति में समान रूप से सहायक है।

४. गणेश मंत्र साधना

गणपति उपनिषद के अनुसार गणपति का सर्वश्रेष्ठ और सर्वप्रिय मंत्र निम्न है।

‘ॐ गं गणपतये नमः।’

साधक या गृहस्थ व्यक्ति को चाहिए कि वह इस मंत्र का जप निरंतर करता रहे, सोते समय भी इस मंत्र का सतत जप किया जा सकता है, यह मंत्र अपूर्व सिद्धि एवं फलदायक है।

५. मास गणपति उपासना

शास्त्रों में अलग-अलग महीनों में विभिन्न रूपों में गणेश जी की उपासना विशेष सफलतादायक

मानी गई है —

१. चैत्र मास में वासुदेव रूपी गणेश जी की उपासना करनी चाहिए।
२. वैशाख मास में 'संकर्षण' रूपी गणेश जी की उपासना करनी चाहिए।
३. ज्येष्ठ मास में प्रद्युम्न रूपी गणेश जी की पूजा मान्य है।
४. आषाढ़ में बहुला गणेश जी की पूजा का विधान है।
५. श्रावण मास में अनिरुद्ध रूपी गणेश पूजा मान्य है।
६. भाद्रपद मास में सिद्धि विनायक की पूजा श्रेष्ठ फलदायक है।
७. आश्विन में कपर्दीश गणेश जी की पूजा करनी चाहिए।
८. कार्तिक में विघ्न विनायक गणेश जी की पूजा श्रेष्ठ मानी गई है।
९. मार्गशीर्ष मास में संकट हरण गणेश पूजा का विधान है।
१०. पौष मास में विघ्न विनाशक गणेश पूजा मान्य है।
११. माघ मास में दुर्डीराज गणपति पूजा फलदायक है।
१२. फाल्गुन में सर्व सिद्धिदायक गणपति पूजा का विधान है।

जो साधक गणेश चतुर्थी का व्रत करते हों, उन्हें मास से संबंधित गणेश नाम का उच्चारण कर गणेश को भाग लगाना चाहिए।

६. द्वात्रिंशाक्षर मंत्र

यह मंत्र अत्यंत ही अनुकूल और तुरंत प्रभाव देने वाला माना गया है। **ब्रह्मवैवर्त पुराण** में बताया गया है कि श्री गणेश जी को यह मंत्र सबसे अधिक प्रिय है —

मंत्र

ॐ श्रीं हीं क्लीं गणेशाय ब्रह्मस्वरूपाय चारवे।

सर्व सिद्धि प्रदेशाय विघ्नेशाय नमो नमः।

श्री गणेश जी के इस मंत्र में ३२ अक्षर हैं। यह सम्पूर्ण कामनाओं को देने वाला तथा धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष का शीघ्र ही फलदायक मंत्र है। इसके पांच लाख जप से साधक को मंत्रसिद्धि प्राप्त हो जाती है। इस मंत्र के सिद्ध होने पर घर में विघ्न नहीं आते, उसे असाधारण वक्तृता, आर्थिक क्षेत्र में पूर्ण सम्पन्नता तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त हो जाती है।

इस मंत्र की साधना में किसी प्रकार के विशेष विधि-विधान की आवश्यकता नहीं है। नित्य २१ माला फेरें, पर इतना ध्यान रहे कि यह क्रम तब तक नियमित रूप से चलता रहे, जब तक पांच लाख मंत्र-जप पूर्ण न हो जाए। मंत्र-जप करते समय सामने विजय गणपति की मूर्ति हो तो विशेष फलदायक होता है।

७. षोडशाक्षरी मंत्र

यह मंत्र भी विशेष महत्वपूर्ण माना गया है, इसकी साधना भी ऊपर लिखे अनुसार ही सम्पन्न होती है। ब्रह्मवैवर्त पुराण में पांच लाख मंत्र-जप बताया गया है, जिससे कि जीवन में अपने लक्ष्य को तुरन्त प्राप्त करने में साधक सफलता प्राप्त कर लेता है—

मंत्र

ॐ गं ग्लौं गं गणपतये विघ्नविनाशिने
स्वाहा ।

ऊपर महागणपति से संबंधित कुछ मंत्र व साधनाएं स्पष्ट की हैं, जो कि प्रत्येक गृहस्थ सुविधाजनक रूप से सम्पन्न कर सकता है, ये साधनाएं पुरुष और स्त्री दोनों ही कर सकते हैं।

★★★

सुमंगलकारक, सर्वकामफलप्रद, सर्वविघ्नहर्ता

महागणपति साधना

ज्ञानानन्दमयं देवं निर्मलं स्फटिकाकृतिम् ।
आधारं सर्वविद्यानां हयग्रीवमुपास्महे ॥
ओंकार माद्यं प्रवदन्ति संतो,
वाचः श्रुतीनामपि यं गृणन्ति ।
गजाननं देवगणानतांघ्रिं;
भजेऽहमर्धोन्दु कृतावतंसम् ॥

“जो ज्ञान तथा आनन्द के स्वरूप हैं, निर्मल स्फटिक तुल्य जिनकी आकृति है, जो समस्त विद्याओं के परम आधार हैं, उन हयग्रीव गणेश जी की मैं उपासना करता हूं, जो आदि ओंकार हैं, वेद की ऋचाएं भी जिनकी स्तुति करती हैं, जिनके सिर पर अर्द्धचन्द्र शोभायमान है, समस्त देवता जिनके चरणों पर नतमस्तक हैं, उन श्री गणेश जी की मैं वन्दना करता हूं।”

श्री गणेश आदि स्वरूप, पूर्ण कल्याणकारी, देवताओं के भी देवता माने गए हैं, जिनकी उपासना-पूजा का उल्लेख वेदों में भी प्राप्त होता है, सभी प्रकार के पूजनों में प्रथम पूजन का अधिकार गणपति का ही माना गया है, इसके पीछे ठोस शास्त्रीय आधार है, किसी भी कार्य को पूर्णरूप से सिद्ध करने के लिए समुचित प्रयत्न करना पड़ता है, लेकिन कई बार सभी प्रकार के प्रयत्नों की पराकाष्ठा होने पर भी ऐन मौके पर कोई न कोई बाधा आ जाती है, इस प्रकार की बाधा को हटाने के लिए, जिससे कार्य निर्विघ्न रूप से पूर्ण हो जाए, और जैसे-तैसे पूरा न होकर **जिस सफलता के साथ कार्य पूरा करने की इच्छा है, उसी रूप में कार्य पूरा हो**, इसके लिए ही गणपति पूजन विधान निर्धारित किया गया है।

गणेश पूजा ही क्यों?

प्रतिभा और ज्ञान की भी एक सीमा अवश्य होती है, व्यक्ति अपने प्रयत्नों से किसी भी कार्य को श्रेष्ठतम रूप से पूर्ण करते हुए उज्ज्वल पक्ष की ओर विचार करता है, लेकिन उसकी बुद्धि एक सीमा से आगे नहीं बढ़ पाती है, बाधाएं उसकी बुद्धि एवं कार्य के विकास को रोक देती हैं, और यही मूल कारण है कि हमारे शास्त्रों में पूजा, साधना, उपासना को विशेष

महत्त्व दिया गया।

सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और पूर्णता ब्रह्मा, विष्णु और महेश द्वारा सम्पादित की जाती है, लेकिन सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही यह व्यवस्था सुचारु रूप से चलती रहे और विघ्न न आए, यह भी गणेश जी के ही जिम्मे है। विघ्नकर्ता और विघ्नहर्ता दोनों ही गणेश ही हैं, तो उनकी पूजा-उपासना करने वाले भक्तों के लिए वह विघ्नहर्ता और ऋद्धि-सिद्धि के प्रदाता हैं, इसीलिए श्री गणेश को **“सर्व-विघ्नौघहरण, सर्वकामफलप्रद, अनन्तानन्तसुखद और सुमंगलकारक”** कहा गया है।

सभी प्रकार के देवता विभिन्न शक्तियों से सम्पन्न हैं, लेकिन विशिष्ट कार्य के लिए विशिष्ट शक्ति सम्पन्न देवताओं का स्मरण, पूजन, साधना सम्पन्न करनी पड़ती है, इसीलिए सभी पूजनों में किसी भी कार्य को निर्विघ्न, पूर्ण फलयुक्त, मंगलमय रूप से करने हेतु श्री गणपति जी का पूजन किया जाता है।

गणेश जी का स्वरूप शक्ति और शिव तत्त्व का साकार स्वरूप है, और इन दोनों तत्त्वों का सुखद स्वरूप ही किसी कार्य में पूर्णता ला सकता है। गणेश शब्द की व्याख्या अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। गणेश का **“ग”** मन के द्वारा, बुद्धि के द्वारा ग्रहण करने योग्य, वर्णन करने

योग्य, सम्पूर्ण भौतिक जगत् को स्पष्ट करता है, तथा “ण” मन, बुद्धि और वाणी से परे ब्रह्म विद्या स्वरूप परमात्मा को स्पष्ट करता है, और इन दोनों के “ईश” अर्थात् स्वामी गणेश कहे गए हैं।

श्री गणेश के द्वादश नाम

सुमुखाश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥

यह श्लोक गणेश-पूजन और उनकी साधना-उपासना के महत्त्व को विशेष रूप से स्पष्ट करता है, इसका तात्पर्य यह है, कि जो व्यक्ति विद्या प्रारम्भ करते समय, विवाह के समय, नगर में अथवा नए भवन में प्रवेश करते समय, यात्रा में कहीं बाहर जाते समय, संग्राम अर्थात् शत्रु और विपत्ति के समय, यदि श्री गणेश जी के इन बारह नामों का स्मरण करता है, तो उसके उद्देश्य की पूर्ति में अथवा कार्य की पूर्णता में किसी प्रकार का विघ्न नहीं आता, गणेश जी के ये बारह नाम—

१. सुमुख, २. एकदन्त, ३. कपिल, ४. गजकर्ण, ५. लम्बोदर, ६. विकट, ७. विघ्ननाशक, ८. विनायक, ९. धूम्रकेतु, १०. गणाध्यक्ष, ११. भालचन्द्र, और १२. गजानन हैं।

इनमें से प्रत्येक नाम का एक विशेष अर्थ है और विशेष भाव है, संक्षिप्त में यही कहना उचित है, कि साधक को अपने पूजा कार्य में गणेश की पूजा एवं इन नामों के जप को एक निश्चित स्थान अवश्य देना चाहिए।

मंत्र साधना और तंत्र साधना का मार्ग गुरु-गम्य माना गया है, जो साधक गुरु परम्परा से गणपति सपर्या की विद्या प्राप्त करते हैं, उन्हें ही उपासना में प्रवेश का अधिकार है।

तंत्र शास्त्र के सबसे महान रचयिता भगवान परशुराम माने गए हैं और “परशुराम कल्पसूत्र” में, जो कि तंत्र शास्त्र का सर्वाधिक प्रामाणिक ग्रंथ है, लिखा है—

देवं सिद्धलक्ष्मी समाश्लिष्टपुष्पाश्वम्, अर्धेन्दुशेखर-
मारकतवर्णमातुलुगंगदापुण्ड्रेक्षुकार्मुकशूलसुदर्शनशंखं -
पाशोत्पलधान्यमंजरी निजदन्तांचल रत्न कलश परिष्कृत पाण्ये
कादशकं प्रभिल्लकटमानन्दपूर्ण मशेषविघ्न-ध्वंसिनं विघ्नेश्वरं ध्यात्वा।

अर्थात् महागणपति के बाएं भाग में सिद्ध लक्ष्मी, मणिमय रत्न सिंहासन पर विराजमान हैं, और गणपति का शरीर करोड़ों सूर्यों के समान चमकीला, रक्त वर्णीय है, मस्तक पर अर्द्धचन्द्र है, ग्यारह भुजाओं में मातुलुंग, गदा, इक्षु, सुदर्शन, शूल, शंख, पाश, कमल, धान्य, मंजरी, भग्नदन्त तथा रत्न कलश हैं, ऐसे परमानन्द, पूर्ण सर्वविघ्न-विध्वंसक, महागणपति का ध्यान करना चाहिए।

परशुराम तंत्र में और अन्य ग्रंथों में गणपति पूजन का जो विवरण दिया गया है, उसकी अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग व्याख्या कर, बाद में रचनाकारों ने महागणपति पूजा के विभिन्न भेद कर दिए।

लोक जीवन में गणपति का स्थान

महागणपति का लोक जीवन में, लोक कथाओं में जो विवरण एवं स्थान है, उतना विवरण किसी अन्य देव शक्ति का नहीं होता, सामान्य बातचीत में किसी कार्य का शुभारम्भ करने को, कार्य का श्री गणेश कहा जाता है, किसी भी प्रकार के पूजन में यदि गणेश जी की मूर्ति नहीं होती है, तो पंडित लोग सुपारी पर मौली बांधकर गणेश जी की स्थापना करते हैं, दीपावली पर्व

हो तो लक्ष्मी के साथ गणेश जी की प्रतिष्ठा निश्चित है, उत्तर-प्रदेश में तो किसी भोज के समय एक मंगल घट चूल्हे के पास रख दिया जाता है, और कड़ाही का प्रारम्भ गणेश गांठ से किया जाता है, जल से भरे घड़े अथवा मंगल कलश में गणेश की प्रतिष्ठा सभी शुभ कार्यों में सम्पन्न की जाती है।

बंगाल में वसन्त पंचमी महोत्सव तथा शिक्षा संस्कार समारोह में “सरस्वती गणेश” की पूजा की जाती है, गणेश चतुर्थी को उत्तर-प्रदेश के अवध क्षेत्र में “बहुला-चौथ” के रूप में सम्पन्न किया जाता है, जिसमें माताएं विधि-विधान सहित गणेश जी की पूजा करती हैं।

महाराष्ट्र तथा दक्षिण भारत में भाद्रपद सुदी चतुर्थी को स्थान-स्थान पर गणेश जी की प्रतिमा समारोह के साथ प्रतिष्ठित की जाती है, और अनन्त चतुर्दशी को गणेश विसर्जन सम्पन्न किया जाता है।

पंजाब अथवा बंगाल, महाराष्ट्र अथवा मध्य प्रदेश, तमिलनाडु अथवा राजस्थान प्रत्येक प्रदेश साहित्य में, जन-जीवन में गणेश के पूजन का विधान है, और यह पूजन का एक अंग ही बन गया है।

शास्त्रोक्त गणपति पूजा विधान

यदि मन में आस्था है, तो कृपा किसी न किसी रूप में हो ही जाती है, लेकिन प्रत्येक पूजा-साधना के कुछ विशेष नियम होते हैं, उनका पालन करने से विशेष फल अवश्य ही प्राप्त होता है।

गणपति के पूजा-विधान में विशेष बात यह है, कि चतुर्थी गणपति का प्रकट दिवस है, इसी कारण प्रत्येक मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को “गणेश चतुर्थी” और शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को “विनायक चतुर्थी” कहा जाता है।

गणपति मूल रूप से जल तत्त्व प्रधान देवता हैं, और जल ही जीवन है, इसीलिए अपने जीवन में जल तत्त्व को तीव्र करने हेतु, पूर्णता प्राप्त करने हेतु गणपति का पूजन विशेष रूप से प्रभावकारी है।

गणपति पूजन में विशेष बात यह है, कि घर में तीन गणपति प्रतिमाएं नहीं होनी चाहिए, और मंगलवार के अतिरिक्त किसी भी अन्य वार को गणपति की स्थापना की जाती है, गृहस्थ व्यक्तियों को आसन पर बैठे हुए गणपति की स्थापना करनी चाहिए, और तंत्र साधना करने वाले संन्यासियों को खड़े गणपति की

पूजा-साधना करनी चाहिए।

गणपति साधना व पूजन में, “गणपति प्रतिमा”, “गणपति यंत्र”, ताम्रपात्र, मौली, पुष्प, अबीर, गुलाल, नैवेद्य, जल तथा दूर्वा अर्थात् दूब और अक्षत विशेष रूप से आवश्यक हैं, इसके अतिरिक्त सुपारी को भी आवश्यक माना गया है।

पूजा क्रम

सर्वप्रथम साधक अपने स्थान पर, स्वच्छ आसन पर बैठ कर आसन की पूजा करे, और सामने गणपति प्रतिमा तथा यंत्र के लिए साफ लाल आसन बिछाए, और उस पर गणपति यंत्र तथा प्रतिमा स्थापित करे।

अपने दाएं हाथ में ताम्रपात्र से जल लेकर पूजन का संकल्प करे और जल भूमि पर छोड़ दे, इसके पश्चात् पात्र से जल लेकर चारों ओर छिड़के, यंत्र और प्रतिमा को धोकर आसन पर स्थापित करे, और हाथ में दीपक लेकर यह प्रार्थना करे कि — “हे देव! आप समस्त विघ्न रूपी वनों को दहन करने में प्रबल हैं, विपत्ति एवं विघ्न के समय विघ्न विजयी रूपी सूर्य के प्रकाश से दसों दिशाएं प्रकाशित कर देते हैं, और समस्त विद्याओं, वैभव के अधीश्वर हैं, आप स्थान ग्रहण करें।”

इसके पश्चात् साधक पुष्प, अबीर-गुलाल, अक्षत इत्यादि अर्पित करे और मौली वस्त्र स्वरूप चढ़ाए।

गणपति पूजन में तुलसी का प्रयोग सर्वथा वर्जित है, दूर्वा अर्थात् दूब विशेष फलदायक मानी गई है।

इसके पश्चात् एक कोने में चार सुपारी चावलों की ढेरी पर स्थापित करे, और उनके सामने गणपति को चढ़ाया गया नैवेद्य रखे, ये चार सुपारियां गणपति के चार सेवकों — गालव, मुद्गल, गार्ग्य और सुधाकर की प्रतीक हैं, साधक इन्हें गणपति पर चढ़ाया हुआ प्रसाद ही चढ़ाए।

अब प्रतिमा के सामने चावल की ढेरियां बनाकर प्रत्येक पर गणपति के बारह स्वरूपों — सुमुख, एकदन्त, कपिल, गजकर्ण, लम्बोदर, विकट, विघ्ननाशक, विनायक, धूम्रकेतु, गणाध्यक्ष, भालचन्द्र, गजानन का ध्यान करते हुए प्रत्येक का पूजन करे।

गणपति पूजन में मंत्रसिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठायुक्त **“गणपति यंत्र”** विशेष आवश्यक है, क्योंकि यह गणपति की शक्तियों का साकार स्वरूप है, इसके पश्चात् साधक नारियल तथा ऋतु फल अर्पित करे, और अपने

स्थान पर खड़े होकर दोनों हाथों से ताम्रपात्र से जल अर्पित करे, गणपति के बीज मंत्र के सम्बन्ध में बहुत अधिक मत-मतांतर हैं, इस सम्बन्ध में मूल बीज मंत्र तो केवल **“गं”** ही है, अतः साधक को **“ॐ गं गणपतये नमः”** बीज मंत्र की पांच माला का जप उसी स्थान पर बैठकर करना चाहिए।

इसके पश्चात् प्रदक्षिणा सम्पन्न कर आरती सम्पन्न की जानी चाहिए, गणपति की प्रतिमा का, एक बार ही प्रदक्षिणा का शास्त्रोक्त नियम है।

गणपति की पूजा-उपासना चाहे किसी भी विपरीत स्थिति में विधि-विधान सहित सम्पन्न की जाए, तो साधक की कामनापूर्ति, यश-लाभ, विघ्नों से शान्ति, कष्टों का नाश अवश्य ही प्राप्त होता है।

कुण्डलिनी जागरण में भी प्रथम चक्र अर्थात् मूलाधार चक्र को गणेश स्थान कहा गया है, अतः योग और तंत्र में भी सिद्धि तभी प्राप्त हो सकती है, जब गणपति की साधना में सिद्धि प्राप्त हो।

जीवन की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि विजय गणपति साधना

कलियुग में गणपति शीघ्र सफलतादायक देवता माने गए हैं। जीवन में किसी भी शुभ कार्य को करने से पूर्व गणपति की पूजा आवश्यक मानी गई है। गणपति जीवन में पूर्ण समृद्धि और ऋद्धि-सिद्धि प्रदान करने वाले तथा जीवन को प्रत्येक दृष्टि से ऊंचा उठाने वाले देवता माने गए हैं। यद्यपि गणपति के कई रूप प्रचलित हैं और अलग-अलग साधनाओं में अलग-अलग रूपों का ध्यान और पूजा का प्रचलन है, परंतु सभी साधकों ने एक स्वर से इस बात को स्वीकार किया है कि गृहस्थ जीवन के लिए 'विजय गणपति साधना' सर्वश्रेष्ठ है, और यही एकमात्र ऐसी साधना है, जो गृहस्थ जीवन को सभी दृष्टियों से पूर्णता देने में समर्थ है।

२७

दक्षिण में विजय गणपति का भव्य मंदिर है, महाराष्ट्र में प्रत्येक गृहस्थ अपने घर में विजय गणपति की स्थापना शुभ मानते हैं। बाली, जावा, सुमात्रा, द्वीपों में भी विजय गणपति के मंदिर हैं, विजय गणपति के बारे में साधकों की ऊंची राय है, मैं कुछ साधकों के विचार नीचे दे रहा हूँ।

जिसके घर में विजय गणपति की मूर्ति या विग्रह नहीं है, वह घर श्मशान के तुल्य है।

- स्वामी बोधानन्द

सामान्य गृहस्थ जटिल साधनाएं नहीं कर सकते, पर उनके घर में गणपति तो स्थापित हो ही सकते हैं, क्योंकि यही एकमात्र ऐसे गणपति हैं, जो कि गृहस्थ जीवन को पूर्णता देने में समर्थ हैं।

- सीताराम स्वामी

धन, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा, उन्नति, स्वास्थ्य-सुख, वाहन, संतान, पत्नी-सुख, दीर्घायु, भाग्योदय, पति-सुख, आर्थिक उन्नति, आदि सभी कुछ विजय गणपति में समाहित हैं, फिर वह गृहस्थ दुर्भाग्यशाली ही कहा जाएगा, जिसके घर में ऐसा विग्रह स्थापित नहीं होगा।

- त्रिजटा अघोरी

'कलौ चण्डी विनायकौ' के अनुसार कलियुग में देवी और गणपति ही शीघ्र फलप्रदायक हैं। गणपति में भी विजय

गणपति तुरंत और पूर्ण फलप्रदायक देवता हैं, जिसके घर में विजय गणपति की स्थापना नहीं होती या पूजा नहीं होती, उसके घर में उन्नति कैसे सम्भव है? वह व्यक्ति ठीक वैसा ही है, जैसे कि गंगा के किनारे कोई प्यासा हो।

- मां योगत्रयी

वस्तुतः साधकों ने इस बात को अनुभव किया है कि विजय गणपति जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण सफलतादायक हैं। गृहस्थ को चाहिए कि वे अपने पूजा स्थान में अन्य देवताओं के साथ-साथ विजय गणपति विग्रह की भी स्थापना करें।

- विजय सिंहल

विजय गणपति स्थापन-

साधक को श्रेष्ठ, शुभ समय में गणपति की मूर्ति बनानी चाहिए या किसी योग्य कारीगर से इस प्रकार की मूर्ति का निर्माण करना चाहिए। जब गणपति विग्रह तैयार हो जाए, तो उसे पुण्य नक्षत्र में अभिषेक द्वारा साधना कक्ष में स्थापित करना चाहिए।

इसके बाद षोडशोपचार पूजा करके विशेष मंत्रों से संजीवन करना चाहिए और साथ ही साथ प्राण-प्रतिष्ठा प्रयोग पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न करना चाहिए, तभी वह मूर्ति या विग्रह चैतन्य और फलप्रदायक होते हैं।

जब गणपति विग्रह में प्राण-प्रतिष्ठा हो जाए, तब

गणेश गायत्री मंत्र से उस पर अभिषेक करना चाहिए। इस अभिषेक में दूर्वा, जल और दूध का प्रयोग होता है तथा निरंतर ग्यारह सौ गणेश गायत्री मंत्र से अभिषेक होता है।

गणेश गायत्री मंत्र निम्नलिखित है-

**एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि,
तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।**

जब अभिषेक सम्पन्न हो जाए, तो उस पर सर्व सिद्धि गणपति मंत्र का एक लाख जप करना चाहिए, यह मंत्र निम्नलिखित है-

**ॐ श्रीं हीं क्लीं गणेशाय ब्रह्मस्वरूपाय चारवे सर्व
सिद्धि प्रदेशाय विघ्नेशाय नमो नमः ।।**

यह बत्तीस अक्षर का मंत्र सम्पूर्ण कामनाओं को देने वाला तथा धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष का फलप्रदायक मंत्र माना गया है। इस मंत्र के एक लाख जप से वह गणपति विग्रह पूर्ण सिद्धिदायक हो जाता है।

इसके बाद इक्कीस हजार मंत्रों से गणपति को चैतन्य किया जाता है, यह मंत्र "गणपति चैतन्य मंत्र" कहलाता है।

**ॐ गं ग्लौं गं गणपतये विघ्नविनाशिने
स्वाहा ।**

इस प्रकार जब वह विग्रह चैतन्य हो जाए, तब अनंत कालातीत साधना से उस विग्रह का पूजन किया जाता है, इससे वह विग्रह या मूर्ति अनंत समय तक फलप्रदायक बनी रहती है।

ऊपर मैंने गणपति साधना से सम्बन्धित तथ्य स्पष्ट किए हैं। मैंने अपने जीवन में सैकड़ों साधनाएं की हैं और हजारों गृहस्थ लोगों को मंत्र-ज्ञान और साधनाएं सिखाई हैं, जिससे कि वे जीवन में सभी दृष्टियों से उन्नति और पूर्णता प्राप्त कर सकें हैं, परंतु मेरा यह अनुभव है कि विजय गणपति साधना अत्यन्त ही श्रेष्ठ, आवश्यक और तुरंत फलप्रदायक है। प्रत्येक गृहस्थ के घर में इस प्रकार का विग्रह स्थापित होना परम सौभाग्य का संकेत माना जाता है। वास्तव में वह गृहस्थ-घर धन्य है, जिसके घर में इस प्रकार का विग्रह स्थापित होता है। सम्बन्धित गृहस्थ अपने घर में मंत्र चैतन्य सिद्धिदायक धातु निर्मित, मंत्रसिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठा युक्त विजय गणपति विग्रह स्थापित कर इसका फल स्वयं ही अनुभव कर सकता है।

★★★

मयूरेश स्तोत्र चिन्ता एवं रोग निवारण हेतु

रु मार्त पंचदेवोपासक होते हैं। ये पांच देव हैं— १. श्री विष्णु २. श्री शिव ३. श्री शक्ति ४. श्री सूर्य ५. श्री गणपति।

इनमें से जो मात्र वैष्णव हैं, वे विष्णु को ही मुख्य अंग मानकर पूजा करते हैं, इस प्रकार शैव शिव को, शाक्त शक्ति को, सौर्य सूर्य को और गणपत्य गणेश जी को मुख्य मानते हैं।

गणेश शब्द का मूल अर्थ है— समस्त जीव जाति के स्वामी। कुछ लोगों का यह कथन है कि ये अनार्यों के देवता थे, और बाद में आर्यों ने इन्हें पंच देवताओं में स्थान दिया। यह भ्रम विदेशियों द्वारा फैलाया हुआ है। हमारी सभ्यता के

प्रारम्भ से ही जिन देवताओं की उपासना होती आई है, उनमें गणेश सर्वप्रथम पूजनीय रहे हैं।

गणेश का वर्णन कई स्थानों पर आया है, और अनुभवों से यह सिद्ध हुआ है कि गणपति की पूजा जीवन में मंगलकारी एवं अत्यन्त अनुकूल रहती है। जो व्यक्ति अन्य किसी देवी-देवताओं की पूजा नहीं कर सकता, उसे गणेश पूजन अवश्य ही करना चाहिए। मेरा व्यक्तिगत अनुभव यह रहा है कि यदि हम नित्य प्रातः उठते समय गणपति का स्मरण करें, तो सारा दिन प्रसन्नता से बीतता है, और उस दिन विशेष शुभ, फलप्रदायक समाचार मिलते हैं।

बाबा हरिदास जी का मेरे जीवन में विशेष स्थान है, वे प्रबल गणेशोपासक थे, गणपति ही उनके इष्ट थे, और गणपति ही की छोटी-सी मूर्ति को वे अपनी आंख की कोर में रखते थे, जो कि राई के बराबर बड़ी थी। उन्होंने बताया कि कलियुग में शीघ्रातिशीघ्र फलप्रदायक देव गणपति ही हैं। इसीलिए प्रत्येक कार्य के पूर्व गणपति की पूजा एवं ध्यान किया जाता है, वह कार्य सिद्ध हो ही नहीं सकता, जिसके प्रारम्भ में गणपति पूजन न किया गया हो। जिस व्यक्ति के गणपति इष्ट हैं, आर्थिक दृष्टि से उसके जीवन में किसी प्रकार की कोई न्यूनता रह ही नहीं सकती।

आगे के पृष्ठों में मैंने गणपति से सम्बन्धित कुछ

स्तोत्र दिये हैं, जो संक्षिप्त होते हुए भी अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। प्रातः उठकर यदि व्यक्ति इनमें से किसी भी एक स्तोत्र का पाठ कर ले, तो उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता। चिन्ता एवं रोग निवारण के लिए **“मयूरेश स्तोत्र”** अत्यन्त समर्थ है। यह स्तोत्र मनुष्य को भक्ति मार्ग में लगाने वाला तथा समस्त प्रकार के पापों का नाश करने वाला है। मानसिक रूप से चाहे कितनी ही चिन्ताएं व्यक्ति को परेशान कर रही हों, यदि वह ग्यारह दिन तक प्रातः उठकर **“मयूरेश स्तोत्र”** का पाठ कर ले, तो वह स्वयं ही आश्चर्यजनक रूप से अनुभव करेगा कि चिन्ताएं एवं समस्याएं स्वतः ही समाप्त हो रही हैं, और उन समस्याओं का सुलझाव अपने अनुकूल हो रहा है। यह शुभ स्तोत्र मानसिक चिन्ता तथा शारीरिक रोग को दूर करने में अत्यधिक सहायक एवं अनुकूल है।

मेरे एक मित्र कई वर्षों से सर्दी-खांसी से पीड़ित थे। उन्होंने सैकड़ों इंजेक्शन लगवाए होंगे और न मालूम कितने ही वैद्यों की दवाइयां सेवन की होंगी, पर रोग नियंत्रण में आ ही नहीं रहा था। एक दिन जब उन्होंने अपनी व्यथा मेरे सामने प्रकट की, तो मैंने उन्हें **“मयूरेश स्तोत्र”** का नित्य पाठ करने की सलाह दी। उन्होंने दूसरे ही दिन से मेरे बताए हुए तरीके से स्तोत्र का पाठ करना शुरू किया, उनका पुराना रोग मात्र तीस दिन के पाठ से ही समाप्त हो गया,

और आज लगभग तीन वर्ष बीत गए हैं, उस रोग से संबंधित कोई शिकायत उन्हें नहीं है।

मैंने इस स्तोत्र का पाठ करने की सलाह कई रोगियों को दी है और इसका आश्चर्यजनक फल प्राप्त हुआ है। कई भयंकर रोगों में भी इस स्तोत्र ने रामबाण की तरह काम किया है, और उन्हें असाध्य रोगों से मुक्ति दिलाई है।

नित्य प्रातः स्नान कर, शुद्ध रेशमी वस्त्र पहिन कर गणपति की मूर्ति या उसके चित्र के सामने बैठकर श्रद्धापूर्वक एक बार 'मयूरेश-स्तोत्र' का पाठ करें और इस प्रकार तब तक करते रहें, जब तक कि वह कार्य सिद्ध न हो जाए। निश्चय ही इस स्तोत्र का पाठ फलदायक सिद्ध होगा, इसमें कोई संदेह नहीं।

संकट नाश के लिए गणपति से सम्बन्धित एक अन्य महत्त्वपूर्ण स्तोत्र '**संकटनाशन स्तोत्र**' है। यह स्तोत्र भी अपने-आप में महत्त्वपूर्ण है। व्यक्ति के जीवन में कितना ही भयंकर संकट क्यों न आया हो, यदि वह इस स्तोत्र का पाठ नित्य श्रद्धापूर्वक करे, तो वह उस संकट से मुक्ति प्राप्त करने में सफल हो जाता है। इस स्तोत्र का प्रभाव मैंने यहां तक देखा है कि व्यक्ति जेल से मुक्त हो जाता है तथा मुकदमे में सफलता प्राप्त कर लेता है।

जिन व्यक्तियों पर मुकदमे चल रहे हों या शत्रु

परेशान कर रहे हों, तो उनके लिए यह स्तोत्र कल्पवृक्ष के समान है। उन्हें चाहिए कि इस स्तोत्र का पाठ नित्य पांच बार करें, और तब तक इस स्तोत्र का पाठ चालू रखें, जब तक कि उन्हें अपने कार्य में सिद्धि प्राप्त न हो जाए। शत्रु विजय, मुकदमे में सफलता तथा बाधाओं की शान्ति के लिए इससे बढ़कर कोई अन्य स्तोत्र नहीं है।

गणेश पुराण में समस्त कामनाओं की सिद्धि के लिए '**गणेशाष्टक**' दिया गया है। यह गणेशाष्टक ऋद्धि-सिद्धि के लिए तथा व्यापारिक उन्नति के लिए अत्यन्त फलप्रद है। जिस व्यक्ति का व्यापार भली प्रकार न जम रहा हो या वह आर्थिक दृष्टि से परेशानी अनुभव कर रहा हो, तो उसे चाहिए कि वह गणेशाष्टक का पाठ नित्य करे। आर्थिक सम्पन्नता के लिए यह अष्टक अद्भुत चमत्कारी है। बिना कुछ भी व्यय किए केवल मात्र इसका पाठ ही व्यक्ति की सम्पन्नता में सहायक होता है। मैंने जिन-जिन व्यक्तियों को इस स्तोत्र का पाठ करने की सलाह दी है, उन्हें आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त हुए हैं। उनके पत्रों से ध्वनित होता है कि इस स्तोत्र का पाठ करने के बाद से उन्हें व्यापार में अद्भुत सफलता मिली है। बेकारी का दौर समाप्त हो गया है तथा आर्थिक दृष्टि से किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहा है। मेरी तो यहां तक मान्यता है कि यदि व्यक्ति सभी शक्तियों से सुखी, सफल एवं सम्पन्न हो, तब भी उसे इस

गणेशाष्टक का नित्य पाठ करना चाहिए। ऐसा करने से उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रह सकता।

लक्ष्मी प्राप्ति के लिए मैंने इन्हीं पृष्ठों में गणपति का एक स्तोत्र दिया है, जो अपने-आप में संक्षिप्त होते हुए भी पूर्ण फलप्रद है। यदि व्यक्ति इस स्तोत्र की नित्य एक माला फेंके अथवा मात्र पांच पाठ ही नित्य करे, तो उसे जीवन में पूर्ण लक्ष्मी प्राप्ति होती है, तथा आर्थिक जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता। मेरी स्वयं की दैनिक पूजा में यह स्तोत्र सम्मिलित है।

इसी क्रम में मैंने गणपति के दो अत्यन्त दुर्लभ स्तोत्र दिए हैं, जिनमें से एक 'गणाधिप स्तोत्र' है। यह स्तोत्र श्री एवं पुत्र की प्राप्ति के लिये है। दूसरा स्तोत्र पुत्र की प्राप्ति के लिये है। ये दोनों ही स्तोत्र अत्यन्त चमत्कारिक एवं पूर्ण लाभप्रद हैं। श्री एवं पुत्र की प्राप्ति के लिए ये स्तोत्र सुललित कंठ से गाये जाने चाहिए। शंकराचार्य विरचित यह स्तोत्र अत्यन्त दुर्लभ है तथा इसके नित्य पाठ से लक्ष्मी प्राप्त होती है तथा संतान सुयोग्य बनती है। यदि संतान की उन्नति में कोई बाधा अनुभव होती हो या उसे नौकरी नहीं मिल रही हो या मंद बुद्धि हो अथवा उसकी परीक्षा की सफलता में संदिग्धता हो, तो व्यक्ति को चाहिए कि इस स्तोत्र का नित्य पाठ करे। कुछ ही दिनों में वह खुद अनुभव करेगा कि यह स्तोत्र इस प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए अद्भुत लाभदायक है।

पुत्र की प्राप्ति के लिए जो स्तोत्र दिया गया है, वह आकार में भले ही छोटा हो, परंतु उसका प्रभाव विशेष है। यद्यपि संतान प्राप्ति के लिए अन्य कई उपाय हैं, परंतु मेरे अनुभव में यह स्तोत्र पूर्ण लाभप्रद है। इस स्तोत्र का पाठ स्त्री या पुरुष दोनों में से कोई भी कर सकता है। यदि श्रद्धापूर्वक नित्य पाठ किया जाए, तो उसके जीवन में पुत्र का अभाव रह ही नहीं सकता। इस प्रकार का प्रयोग मैंने अपने परिचितों से करवाया है और परिणाम पूर्णरूपेण अनुकूल रहे हैं।

निश्चय ही गणपति समस्त कामनाओं की सिद्धि देने में सहायक हैं, अतः यथासंभव हमें गणपति का पूजन या उनके स्तोत्रों का पाठ नित्य करना चाहिए। हमारी पूजा में चाहे अन्य स्तोत्र सम्मिलित न हों, पर गणपति से संबंधित एक स्तोत्र अवश्य ही प्रारम्भ में रहना चाहिए, जिससे कि हमारे जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव या बाधा न रहे।

मंगल विधान के लिए

गणपितर्विघ्नराजो लम्बतुण्डो गजाननः।
द्वैमातुरश्च हेरम्ब एकदन्ती गणाधिपः॥
विनायकश्चारुकर्णः पशुपालो भवात्मजः।
द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्॥

सर्वविध रक्षा के लिए -

गणेश न्यास

श्री गणेशाय नमः । आचम्य प्राणायामं कृत्वा ।
दक्षिणहस्ते वक्रतुण्डाय नमः । वामहस्ते शूर्पकर्णाय नमः । ओष्ठे
विघ्नेशाय नमः । सम्पुटे गजाननाय नमः । दक्षिणपादे लम्बोदराय
नमः । वामपादे एकदन्ताय नमः । शिरसि एकदन्ताय नमः ।
चिबुके ब्रह्मणस्पतये नमः । दक्षिणनासिकायां विनायकाय नमः ।
वामनासिकायां ज्येष्ठराजाय नमः । दक्षिणनेत्रे विकटाय नमः ।
वामनेत्रे कपिलाय नमः । दक्षिणकर्णे धरणीधराय नमः । वामकर्णे
आशापूरकाय नमः । नाभौ महोदराय नमः । हृदये धूम्रकंतवे
नमः । ललाटे मयूरेशाय नमः । दक्षिणबाहौ स्वानन्दवासकाय
नमः । वाम बाहौ सच्चित्तसुखधाम्ने नमः ।

चिन्ता एवं रोग-निवारण के लिए (मयूरेश स्तोत्रम्)

ब्रह्मोवाच

पुराणपुरुषं देवं नाना क्रीडाकरं मुदा ।
सायाविनं दुर्विभाव्यं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
परात्परं चिदानन्दं निर्विकारं हृदि स्थितम् ।
गुणातीतं गुणमयं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
सृजन्तं पालयन्तं च संहरन्तं निजेच्छया ।
सर्वविघ्नहरं देवं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥

नानादैत्यनिहन्तारं नानारूपाणि विभ्रतम् ।
नानायुधधरं भक्त्या मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
इन्द्रादिदेवतावृन्दैरभिष्टुतमहर्निशम् ।
सदसद्व्यक्तमव्यक्तं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
सर्व शक्तिमयं देवं सर्वरूपधरं विभुम् ।
सर्वाविद्याप्रवक्तारं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
पार्वतीनन्दनं शम्भोरानन्दपरिवर्धनम् ।
भक्तानन्दकरं नित्यं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
मुनिध्येयं मुनिनुतं मुनिकामप्रपूरकम् ।
समष्टिव्यष्टिरूपं त्वां मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
सर्वाज्ञाननिहन्तारं सर्वज्ञानकरं शुचिम् ।
सत्यज्ञानमयं सत्यं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
अनेककोटिब्रह्माण्डनायकं जगदीश्वरम् ।
अनन्तविभवं विष्णुं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥

मयूरेश उवाच

इदं ब्रह्मकरं स्तोत्रं सर्वपापप्रनाशनम् ।
सर्वकामप्रदं नृणां सर्वोपद्रवनाशनम् ॥
कारागृहगतानां च मोचनं दिनसप्तकात् ।
आश्रित्वाधिहरं चैव भुक्तिमृक्तिप्रदं शुभम् ॥

संकटनाश के लिए

संकष्टनाशन स्तोत्रम्

नारद उवाच

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम् ।
 भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुः कामार्थसिद्धये ॥
 प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम् ।
 तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ॥
 लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च ।
 सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टकम् ॥
 नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम् ।
 एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ॥
 द्वादशैतानि नामानि त्रिसंध्यं यः पठेन्नरः ।
 न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम् ॥
 विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् ।
 पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम् ॥
 जपेद् गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत् ।
 संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः ॥
 अष्टभ्यो ब्राह्मणभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत् ।
 तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ॥

समस्त कामनाओं की सिद्धि के लिए

गणेशाष्टक

यतोऽनन्तशक्तेरनन्ताश्च जीवा यतो निर्गुणादप्रमेया गुणास्ते ।
 यतो भाति सर्वं त्रिधा भेदभिन्नं सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥
 यतश्चाविरासीज्जगत्सर्वमेतत्तथाब्जासनो विश्वगो विश्वगोप्ता ।
 तथेन्द्रादयो देवसंघा मनुष्याः सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥
 यतो वह्निभानूद्भवो भूर्जलं च यतः सागराश्चन्द्रमा व्योम वायुः ।
 यतो दानवाः किंनरा यक्षसंघाः यतश्चारणा वारणाः श्वापदश्च ॥
 यतः पक्षिकीटा यतो वीरुधश्च सदा तं गणेशं नमामो भजामः ।
 यतो बुद्धिनाशो यतः कार्यसिद्धिः सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥
 यतः पुत्रसम्पद् यतो वाञ्छितार्थो यतोऽभक्तविघ्नास्तथानेकरूपाः ।
 यतः शोकमोहौ यतः काम एव सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥
 यतोऽनन्तशक्तिः स शेषो बभूव धराधारणेऽनेकरूपे च शक्तः ।
 यतोऽनेकधा स्वर्गलोका हि नाना सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥
 यतो वेदवाचो विकुण्ठा मनोभिः सदा नेति नेतीति यत्ता गृणन्ति ।
 परब्रह्मरूपं चिदानन्दभूतं सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥

श्री गणेश उवाच

पुनरुच्ये गणाधीशः स्तोत्रमेतत्पठेन्नरः ।
 त्रिसंध्यं त्रिदिनं तस्य सर्वं कार्यं भविष्यति ॥

यो जपेदष्टदिवसं श्लोकाष्टमिदं शुभम् ।
 अष्टवारं चतुर्थ्यां तु सोऽष्टसिद्धिरवाप्नुयात् ॥
 यः पठेन्मासमात्रं तु दशवारं दिने दिने ।
 स मोचयेदन्धगतं राजवर्धनं न संशयः ॥
 विद्याकामो लभेद्विद्यां पुत्रार्थी पुत्रमाप्नुयात् ।
 वाञ्छितांल्लभते सर्वानेक विशन्तिवारतः ॥
 यो जपेत् परया भक्त्या गजाननपरो नरः ।
 एवमुक्त्वा ततो देवश्चान्तर्धानं गतः प्रभुः ॥

लक्ष्मी प्राप्ति के लिए

ॐ नमो विघ्नराजाय सर्वसौख्यप्रदायिने ।
 दुष्टारिष्टविनाशाय पराय परमात्मने ॥
 लम्बोदरं महावीर्यं नागयज्ञोपशोभितम् ।
 अर्धचन्द्रधरं देवं विघ्नव्यूहविनाशनम् ॥
 ॐ ह्रीं ह्रीं हूं हैं ह्रीं हः हेरम्बाय नमो नमः ।
 सर्वसिद्धिप्रदोऽसि त्वं सिद्धिबुद्धिप्रदो भव ॥
 चिन्तितार्थप्रदस्त्वं हि सततं मोदकप्रियः ।
 सिन्दूरारुणवस्त्रैश्च पूजितो वरदायकः ॥
 इदं गणपतिस्तोत्रं यः पठेद् भक्तिमान् नरः ।
 तस्य गेहं च देहं च स्वयं लक्ष्मीर्न मुंचति ॥

श्री एवं पुत्र की प्राप्ति के लिए श्री गणाधिप स्तोत्रम्

सरागिलोकदुर्लभं विरागिलोकपूजितं,
 सुरासुरैर्नमस्कृतं जरादिमृत्युनाशकम् ।
 गिरा गुरुं श्रिया हरिं जयन्ति यत्पदार्चका;
 नमामि तं गणाधिपं कृपापयः पयोनिधिम् ॥
 गिरीन्द्रजामुखाम्बुजप्रमोददानभास्करं,
 करीन्द्र वक्त्रमानताधसंध वारणोद्यतम् ।
 सरीसृपेशबद्धकुक्षिमाश्रयामि सततं;
 शरीरकान्तिनिर्जिताब्जवन्धुबालसंततिम् ॥
 शुकादिमौनिवन्दितं गकारवाच्यमक्षरं,
 प्रकाममिष्टदायिनं सकाममभ्रपंकतये ।
 चकासनं चतुर्भुजैर्विकासिपद्मपूजितं;
 प्रकाशितात्मतत्त्वकं नमाम्यहं गणाधिपम् ॥
 नराधिपत्वदायकं स्वरादिलोक दायकं,
 जरादिरोगवारकं निराकृता सुरव्रजम् ।
 कराम्बुजैर्धारन्सृणीन् विकारशून्यमानसैः
 मुदा सदा विभावितं मुदा नमामि विघ्नपम् ॥

श्रमापनोदनक्षमं समाहितान्तरात्मना,
 समाधिभिः सदाचिंतं क्षमानिधिं गणाधिपम् ।
 रमाधवादिपूजितं यमान्तकात्मसम्भवं;
 शमादिषड्गुणप्रदं नमामि तं विभूतये ॥
 गणाधिपस्य पंचकं नृणामभीष्टदायकं,
 प्रणामपूर्वकं जनः पठन्ति ये मुदायुताः ।
 भवन्ति ते विदाम्पुरः प्रगीतवैभवाः जनाः
 श्चिरायुषांऽधिकश्चियः सुसूनवो न संशयः ॥

पुत्र की प्राप्ति के लिए

संतानगणपति स्तोत्रम्

नमोऽस्तु गणनाथाय सिद्धिबुद्धियुताय च ।
 सर्वप्रदाय देवाय पुत्रवृद्धिप्रदाय च ॥
 गुरुदेवाय पुरवे गोप्त्रे गुह्यासिताय ते ।
 गोप्याय गोपिताशेषभुवनाय चिदात्मने ॥
 विश्वमूलाय भव्याय विश्वसृष्टिकराय ते ।
 नमो नमस्ते सत्याय सत्यपूर्णाय शुण्डिने ॥
 एकदन्ताय शुद्धाय सुमुखाय नमो नमः ।
 प्रपन्नजनपालाय प्रणतार्तिविनाशिने ॥

श्रमं भव देवेश संततिं सुदृढां कुरु ।
 भविष्यन्ति च ये पुत्रा मत्कुले गणनायक ॥
 ते सर्वे तव पूजार्थं निरताः स्युर्वरा मतः ।
 पुत्रप्रदमिदं स्तोत्रं सर्वसिद्धिप्रदायकं ॥

★★★

श्री चिन्तामणि गणपति प्रयोग

इस प्रयोग का प्रारम्भ अधिक मास अथवा चैत्र, आषाढ़ अथवा किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी से करना चाहिए, गणपति की संगमरमर, स्वर्ण, चांदी, ताँवे की प्रतिमा अथवा मंत्रसिद्ध "विजय गणपति" की स्थापना करें।

सर्वप्रथम निम्न प्रकार से संकल्प करना चाहिए -

अत्राय अमुकवर्षे अमुकमासे अमुक पक्षे अम १ तिथीं
अमुकवासरे मम अमुककामना सिद्ध्यर्थे लक्ष्मीप्राप्त्यर्थे
श्रीचिन्तामणिगणपतिदेवता - प्रीत्यर्थे श्रीचिन्तामणिप्रयोगः
महं करिष्ये ।

संकल्प करके गणपति की मूर्ति को सर्वप्रथम पंचामृत से तथा उसके बाद शुद्ध जल से स्नान करा कर, पट्टे पर गाले अथवा केसरिया रंग का वस्त्र बिछा कर उसके ऊपर कुंकुम युक्त चावल का 'स्वस्तिक' निर्मित कर उसके मध्य में चावल रखें, उसके ऊपर स्नान कराए हुए गणपति को स्थापित कर, उन्हें चन्दन, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, यज्ञोपवीत तथा पीत वस्त्र से अलंकृत कर पुष्प द्वार पहिनाएँ, तत्पश्चात् उसके सम्मुख

मोतीचूर (साबुत बूंदी के लड्डू) का नैवेद्य रजतपात्र अथवा मिट्टी के पात्र में रख कर गायत्री मंत्र का उच्चारण करते हुए जल चढ़ाएं, उसके बाद यह मंत्र पढ़ें -

ॐ गणानां त्वा गणपति (गूँ) हवामहे प्रियाणां त्वां प्रियपति
(गूँ) हवामहे निधीनां त्वा निधिपति (गूँ) हवामहे वसोमम
आहमजानि गर्भधामात्वमजासि गर्भधाम् ।

इसके उपरान्त निम्नलिखित मूल मंत्र का स्वर्ण, रजत अथवा कमलगट्टे या रुद्राक्ष की माला से ग्यारह हजार बार जप करें।

ॐ ह्रीं श्रीं चिन्तामणिगणपते वांछितार्थ पूरय पूरय
लक्ष्मीदायक ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु सर्वसौख्यं
सौभाग्यं कुरु कुरु स्वाहा श्रीं ह्रीं ॐ ॥

जप की संख्या एवं समय एक समान रखना चाहिए, जहाँ तक सम्भव हो प्रयोग रात्रि के समय ही करना चाहिए। गणपति के सम्मुख रखे गए नैवेद्य को स्वयं ग्रहण करने के बाद बालकों तथा घर के अन्य व्यक्तियों को दे देना चाहिए।

जप के पश्चात् उसी स्थान पर अपना बिछौना बिछाकर सोना चाहिए, सत्य बोलना चाहिए, क्रोध नहीं करना चाहिए। जप के पश्चात् ही भोजन ग्रहण करना चाहिए, सात्विक भोजन ग्रहण करना चाहिए, मिर्च, खट्टाई युक्त खाना नहीं खाना चाहिए, यदि सम्भव हो, तो स्वयं ही खाना बनाकर ग्रहण करना

चाहिए, अथवा स्नान कर, स्वच्छ धुले वस्त्रों को धारण कर, जो खाना बनाए, उसके हाथों का बना खाना ग्रहण करना चाहिए।

जप के पश्चात् स्वयं ग्रहण करने वाला नैवेद्य भोजन के पहले ग्रहण कर लें, तत्पश्चात् हो सके तो तिल, नागियल, शक्कर, घी का दशांश अर्थात् ११ माला का होम करना चाहिए, १२० मंत्र से तर्पण, १२ मंत्र से मार्जन तथा दो या अधिक ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए।

यदि सामर्थ्य हो तो विद्वान्, आस्तिक, सात्त्विक प्रवृत्ति वाले ब्राह्मण जैसा कहें, वैसा ही करना चाहिए, जप के पश्चात् सदैव अपने घर में ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए, जब तक यह प्रयोग चलता रहे, तब तक यजमान को सात्त्विक भोजन तथा ब्रह्मचर्य आदि का पालन करना चाहिए।

यह प्रयोग मनोवांछित कामना या सिद्धि हेतु किया जा सकता है, धन की प्राप्ति हेतु, चाहे जैसा संकट अथवा बाधा आई हो, उस विघ्न से मुक्त होने अथवा रोग मुक्त होने या मन की कोई भी इच्छा पूर्ण करने हेतु यह प्रयोग किया जाता है, जिस संकल्प की पूर्ति करनी हो, उसका पहले संकल्प बोलना चाहिए।

★★★

ज्ञान और चेतना की अनमोल कृतियां पूज्यपाद गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी

द्वारा रचित

अप्सरा साधना	5/-	स्वर्ण सिद्धि	5/-
त्रिजटा अघोरी	5/-	उर्वशी साधना	5/-
भुवनेश्वरी साधना	5/-	सौन्दर्य	5/-
मैं बांहें फैलाये खड़ा हूँ	5/-	पारदेश्वरी साधना	5/-
हंसा! उड़हूँ गगन की ओर	5/-	श्री यंत्र साधना	5/-
सिद्धाश्रम	5/-	सनसनाहट भरा सौन्दर्य	5/-
तंत्र साधनाएं	5/-	मैं सुगन्ध का झोंका हूँ	5/-
हिप्नोटिज्म	5/-	गणपति साधना	5/-
जगदम्बा साधना	5/-	सरस्वती साधना	5/-
स्वर्ण प्रदायक तारा साधना	5/-	शक्तिपात	5/-
शिव साधना	5/-	बगलामुखी साधना	5/-

और ये अमूल्य ग्रंथ जो आपके जीवन की धरोहर हैं—

Meditation 240/- Kundalini Tantra 240/-

फिर दूर कहीं पायल खनकी 96/- ध्यान, धारणा और समाधि 96/-

निखिलेश्वरानन्द स्तवन 96/- कुण्डलिनी नाद ब्रह्म 96/-

सम्पर्क

मान-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.),

फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

आध्यात्मिकता के पथ पर बढ़ते चरण

गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका

मंत्र-तंत्र-यंत्र

विज्ञान

प्रति माह पढ़िए

. साधना ज्ञान में
रोचकता की

त्रिवेणी . अनूठी साधनाएं

. आकस्मिक धन प्राप्ति

. सम्मोहन . रोग निवारण

. ऋण मुक्ति . पौरुष प्राप्ति

. आयुर्वेद . ज्योतिष द्वारा

समस्या निवारण



साथ ही प्रत्येक
वार्षिक सदस्य

को उपहार में

देते हैं कोई एक दुर्लभ

यंत्र . . . सर्वथा निःशुल्क

उसके घर में या व्यापार

स्थल में स्थापित होने योग्य

नोट - पत्रिका का वार्षिक सदस्यता शुल्क १८०/- डाक
व्यय १६/- अतिरिक्त, चेक स्वीकार्य नहीं।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

हाई कोर्ट कालोनी, जोधपुर (राज.), फोन- ०२६१ ३२२०६

संरक्षक :- डॉ नारायण दत्त श्रीमाली